THRU the BIBLE

# प्रतिज्ञा से भलाई

**खंड 4 - उत्पत्ति 1 8 से 24**



# मिलें बढ़ें बाँटें

**मिलें, बाँटें और एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें**



## मिलें
## सप्ताह में एक बार

**आओ तैयार होकर**

टीटीबी की शिक्षाएँ पढ़ें, सुनें या देखें

कोई उपदेश नहीं। कोई शिक्षा नहीं। बल्कि **एक-दूसरे से साझा करना और सीखना।**

**एक साथ मिलना**

चर्चा करते हुए कि आपने **परमेश्वर की बुद्धि** से क्या प्राप्त किया

सीखना

धर्मग्रंथों के प्रश्नों पर चर्चा

अंत में प्रार्थना

अपने अगले मिलन के लिए **पहले से तैयारी करें**

# कैसे
# पवित्रशास्त्र सहभागिता
## का उपयोग करे



**शुरू करने से पहले प्रार्थना करें**
प्रत्येक पाठ को शुरू करने से पहले, प्रभु से प्रार्थना करें कि वह इसका उपयोग आपको अनुग्रह में और हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के ज्ञान में बढ़ाने के लिए करें।



**बाइबल का अंश पढ़ें**
जब आप अंश पढ़ें तो परमेश्वर को अपनी आँखें खोलने और उसके वचन की आपकी समझ को गहरा करने के लिए आमंत्रित करें।



**पवित्रशास्त्र संलग्नता मार्गदर्शिका का अध्ययन करें**
आपके द्वारा पढ़े गए अंश के अर्थ, संदर्भ और व्यक्तिगत अनुप्रयोग पर चिंतन करने के लिए प्रदान की गई पवित्रशास्त्र संलग्नता अध्ययन का अध्ययन करें।



**पवित्रशास्त्र संलग्नता सवालों पर चिंतन करें**
प्रत्येक शिक्षण के बाद, व्यक्तिगत चिंतन और अनुप्रयोग के लिए सूचीबद्ध पवित्रशास्त्र संलग्नता सवालों पर विचार करें और आपके छोटे समूह चर्चाओं के लिए.



**डॉ. जे. वर्नोन मैक्गी की शिक्षा को सुनें**
यदि आप इस अंश पर संपूर्ण ऑडियो शिक्षा सुनना चाहते हैं, तो ttb.bible पर जाएं या अपनी भाषा में THRU the BIBLE ऐप डाउनलोड करने के लिए अंतिम पृष्ठ पर दिए गए QR कोड को स्कैन करें।



**हमारे सुझाए गए रोकने और शुरू करने के आइकन का इस्तेमाल करें। यह आपको सामग्री को सोच-समझकर और अपनी लय में आगे बढ़ाने में मदद करेगा।**

# आपके विचार के लिए


**इस धर्मग्रंथ अध्ययन का उपयोग कैसे करें** पृष्ठ 2

**धन्य जीवन**
(उत्पत्ति 18) पृष्ठ 7

**सदोम और गोमोराह से प्रस्थान**
(उत्पत्ति 19) पृष्ठ 25

**अनसुलझा पाप**
(उत्पत्ति 20) पृष्ठ 45

**वादा पूरा हुआ**
(उत्पत्ति 21) पृष्ठ 57

**विश्वास की परीक्षा**
(उत्पत्ति 22-23) पृष्ठ 73

**इसहाक के लिए एक दुल्हन**
(उत्पत्ति 24) पृष्ठ 89


आशीषित जीवन
उत्पत्ति 18

# आशीषित जीवन

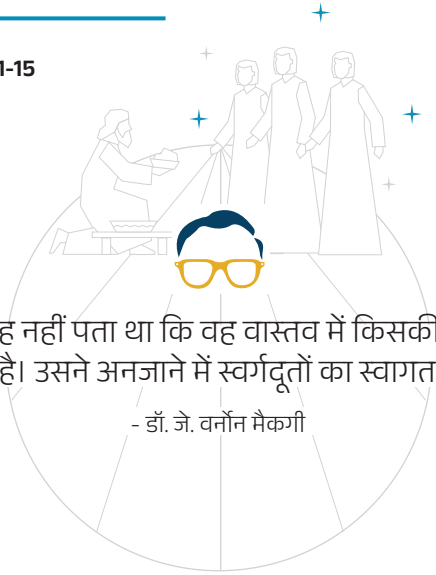
हे स्वर्गीय पिता,

जब हम आपके वचन को खोलते हैं, तो हमारे हृदयों को शांत करें और हमारी समझ को बढ़ाइए। हमारी सहायता करें कि हम इस भाग को सिर्फ पढ़ें ही नहीं, बल्कि आपके स्वभाव, आपके न्याय और आपकी दया को भी समझें। हमें सिखाइए कि आपके साथ निकटता से चलने का क्या अर्थ है, दूसरों के लिए आपके सामने खड़े होने का क्या अर्थ है, और जब न्याय और अनुग्रह साथ-साथ मिलते हैं तब आप पर भरोसा कैसे रखना है। हमारे विचारों को ऐसा आकार दें कि हम आपको सही रूप में देख सकें।

यीशु के नाम में, आमीन।

## परमेश्वर अपने वायदे को फिर से दृढ़ करते है।

**उत्पत्ति 18:1-15**



"अब्राहम को यह नहीं पता था कि वह वास्तव में किसकी मेहमाननवाज़ी कर रहा है। उसने अनजाने में स्वर्गदूतों का स्वागत किया।"

- डॉ. जे. वर्नोन मैकगी

परमेश्वर ने अब्राहम से आखिरी बार बात किए हुए चौदह वर्ष बीत चुके थे।

अब मम्रे के तेज़ धूप में, तीन स्वर्गीय अतिथि अब्राहम के पास आए।

निन्यानवे वर्ष की उम्र और थकान के बावजूद, अब्राहम उनसे मिलने दौड़ा और झुककर उन्हें प्रणाम किया। उसने उनके लिए रोटी, मक्खन, दूध और एक कोमल बछड़े का भोजन तैयार किया और जब वे खाते रहे, वह उनके पास खड़ा रहा। अब्राहम को यह नहीं पता था कि वह स्वर्ग के दूतों की मेहमाननवाज़ी कर रहा है, और उनमें से एक स्वयं परमेश्वर थे।

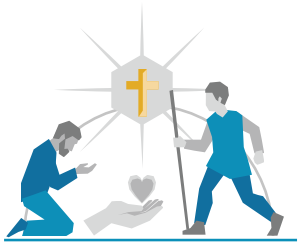


क्या आपने कभी सोचा है कि दूसरों की सेवा करना ही शायद वह तरीका हो सकता है जिससे परमेश्वर आपसे मिलते हैं?

## आध्यात्मिक सत्य



**परमेश्वर के साथ संगति**
उम्र, ताकत या परिस्थितियों तक सीमित नहीं होती।



**परमेश्वर के साथ संगति**
विनम्रता, उदारता और तैयार रहने की भावना को जन्म देती है

जैसे ही भोजन समाप्त होता है, परमेश्वर पूछते हैं, "तेरी पत्नी सारा कहाँ है?" और **नयी प्रतिज्ञा** देते है।

तंबू के द्वार से सुनते हुए, सारा अपने मन में हँसती है। यह वह हँसी है जो कहती है कि यह सच होने के लिए बहुत अच्छा है। लेकिन परमेश्वर दिल की उस शांत हँसी को भी सुनते हैं और धीरे से पूछते हैं-


"क्या **यहोवा**
के लिये कोई काम
**कठिन है** ?"
-उत्पत्ति 18:14

सारा प्रभु के प्रश्न से घबरा जाती है और हँसने से इनकार कर देती है, लेकिन वह सच्चाई को टाल नहीं सकती।

## यह सवाल सारा को क्यों घबरा देता है?

### आध्यात्मिक सत्य



परमेश्वर मानव के विश्वास की कमजोरी को जानते हैं। वे हमारे **संदेह को आनंद में** और हमारे **भय को पूर्णता में** बदल देते हैं।



परमेश्वर के वायदे हमारे विश्वास पर निर्भर नहीं होते, बल्कि **केवल उनके वचन** पर आधारित होते हैं। नियत समय पर उनका वचन कभी असफल नहीं होता।



परमेश्वर के साथ संगति में **सच्चाई, विनम्रता और प्रेम के साथ सुधार** भी शामिल है।



सारा की छिपी हुई हँसी बाद में **आनंद की गवाही** बन जाती है। प्रतिज्ञा का पुत्र इसहाक कहलाएगा, जिसका अर्थ है "हँसी"।

## इसके बारे में सोचे

### सवाल 1

**परमेश्वर के साथ संगति में रहने वाले हृदय के बारे में अब्राहम की सेवा करने की उत्सुकता क्या प्रकट करती है?**

## लागू करें

### सवाल 2

**अपनी ज़िंदगी की कुछ ऐसी परिस्थितियाँ लिखिए जो आपको असंभव लगती हैं।**

**अपनी लिखी हुई परिस्थितियों को पढ़िए और उन बातों को काट दीजिए जो परमेश्वर के लिए कठिन नहीं हैं।**

# परमेश्वर अपना न्याय प्रकट करते हैं।

**उत्पत्ति 18:16-21**



> परमेश्वर जो भी करते हैं, वह सही होता है, और यदि आपको लगता है कि वे सही नहीं हैं, तो समस्या परमेश्वर में नहीं, बल्कि आप में है।

जब वे अतिथि जाने के लिए उठते हैं, तो अब्राहम उनके साथ कुछ दूर तक चलता है। ऊँचे मैदान से नीचे सदोम और गमोरा के नगर दिखाई देते हैं। तब परमेश्वर अपने आप से कहते हैं-

**"यह जो मैं करता हूँ उसे क्या अब्राहम से छिपा रखूँ?"** उत्पत्ति 18:17

## परमेश्वर यह कारण प्रकट करते हैं कि वे अपनी योजना अब्राहम के साथ क्यों साझा करना चुनते हैं?

- **अब्राहम एक महान जाति बनेगा।**
- उसके द्वारा **सभी राष्ट्र आशीषित होंगे।**
- अब्राहम का **प्रभाव पीढ़ियों तक फैला हुआ है।**
- अब्राहम **अपने घराने को धार्मिकता और अनुशासन में चलाते हैं।**
- परमेश्वर चाहते हैं कि अब्राहम उनके **चरित्र को पूरी तरह समझे।**



परमेश्वर बताते हैं कि सदोम के पाप के विरुद्ध उठी हुई पुकार बहुत बड़ी और गंभीर है। वे "नीचे जाकर देखेंगे," जिससे उनका **पूर्ण न्याय और धैर्य** प्रकट होता है। **वे कभी भी जल्दबाज़ी में न्याय नहीं करते।**



## इसके बारे में सोचे

### सवाल 1

**परमेश्वर के न्याय को समझने से पहले उसके स्वभाव को समझना क्यों महत्वपूर्ण है?**

## लागू करें

### सवाल 2

**हमारे आसपास की दुनिया अन्याय और अधर्म से भरी हुई है। कई बार हम चाहते हैं कि परमेश्वर का क्रोध हस्तक्षेप करे। उन तरीकों को लिखिए जिनसे हम पाप के विरुद्ध खड़े हो सकते हैं और उन लोगों के लिए आवाज उठा सकते हैं जो अन्याय सह रहे हैं।**

### जो लागू करना है उसका चित्र बनाये

# अब्राहम ने परमेश्वर के सामने मध्यस्थता की

**उत्पत्ति 18:22-33**

जब स्वर्गदूत सदोम की ओर चले गए, तब अब्राहम यहोवा के सामने खड़ा रहा, और एक अद्भुत बातचीत हुई। अब्राहम मध्यस्थता करता है।

**"क्या तू सचमुच दुष्ट के संग धर्मी भी नाश करेगा?"** उत्पत्ति 18:23

वह पचास धर्मियों से लेकर पैंतालीस, चालीस, तीस, बीस और अंत में दस तक विनती करता है। हर बार परमेश्वर सहमत होते हैं कि उन थोड़े से धर्मियों के कारण नगर को बचा लिया जाएगा।

**मध्यस्थता संगति से उत्पन्न होती है।** अब्राहम परमेश्वर से बहस नहीं करता; वह परमेश्वर के स्वभाव के आधार पर उनसे विनती करता है।



**अब्राहम परमेश्वर के न्याय और दया का सहारा लेता है -**
**"क्या सारी पृथ्वी का न्यायी न्याय न करे?"** उत्पत्ति 18:25

हालाँकि अब्राहम दस पर रुक जाता है, लेकिन परमेश्वर की दया उससे भी आगे बढ़ती है। वह धर्मी को दुष्ट के साथ नष्ट नहीं करेगा। जब न्याय आता है, तब वह आग गिरने से पहले लूत को वहाँ से निकाल देता है।



यह **इस सत्य की ओर संकेत करता है कि कलीसिया परमेश्वर के क्रोध का सामना नहीं करेगी**— क्योंकि हमारा दंड पहले ही मसीह पर आ चुका है।

**परमेश्वर का न्याय और दया उसमें पूर्ण रूप से मिलते हैं।**

## इसके बारे में सोचें

### सवाल 1

**यह वचनांश हमें क्या सिखाता है कि परमेश्वर पाप के साथ व्यवहार करते समय कितना धैर्यवान और न्यायी है?**

### सवाल 2

**परमेश्वर आपके मन में किसके लिए लगातार मध्यस्थता करने का भार दे रहे हैं?**

### जो लागू करना है उसका चित्र बनाये

# सारांश

1. सदोम और गमोरा एक ऐसे संसार का चित्रण करते हैं जो न्याय के अधीन है।

2. आज दुनिया की नैतिक स्थिति सदोम के समान है, हालांकि यह मसीह के पुनः आगमन के समय को निर्धारित नहीं करती।

3. **कलीसिया परमेश्वर के क्रोध का अनुभव नहीं करेगी:**
   - मसीह ने हमारा न्याय अपने ऊपर ले लिया है।
   - परमेश्वर न्याय आने से पहले धर्मी लोगों को उठा लेगा।

4. **परमेश्वर का स्वभाव संपूर्ण शास्त्र में एक समान रहता है।**

# इससे आपको क्या सीख मिली?

अपने जीवन में परमेश्वर की समझ को लागू करना।

# मैक्गी का सुविचार



"दो प्रकार के विश्वासी होते हैं - एक वे जो परमेश्वर के साथ संगति में रहकर आशीषित जीवन जीते हैं, और दूसरे वे जो उसकी इच्छा से बाहर रहकर एक टूटे-बिखरे जीवन को जीते हैं। अंतर केवल इतना है कि आप कहाँ खड़े होने का चुनाव करते हैं।"


सदोम और गमोरा
से निकलना
उत्पत्ति 19

# सदोम और गमोरा से निकलना

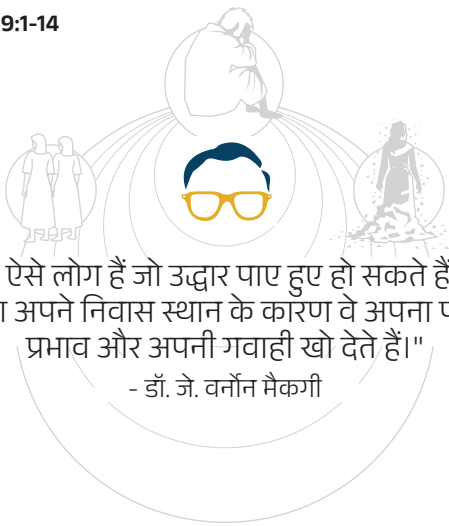
हे स्वर्गीय पिता,

जब हम आपके वचन की ओर आते हैं, तो हम हृदय की स्पष्टता और आत्मा की ईमानदारी के लिए प्रार्थना करते हैं। यह अध्याय गंभीर है, और इसे सही से समझने के लिए हमें आपकी बुद्धि की आवश्यकता है। हमें समझौते से बचाएँ, हमें पाप से वैसे ही घृणा करना सिखाएँ जैसे आप करते हैं, और हमें ऐसा जीवन जीने में सहायता करें जो आपको आदर दे। हम केवल अब्राहम के विश्वास से ही नहीं, बल्कि लूत की असफलता से भी सीख सकें।

यीशु के नाम में, आमीन।

## सदोम में लूत - समझौते की अवस्था में

**उत्पत्ति 19:1-14**

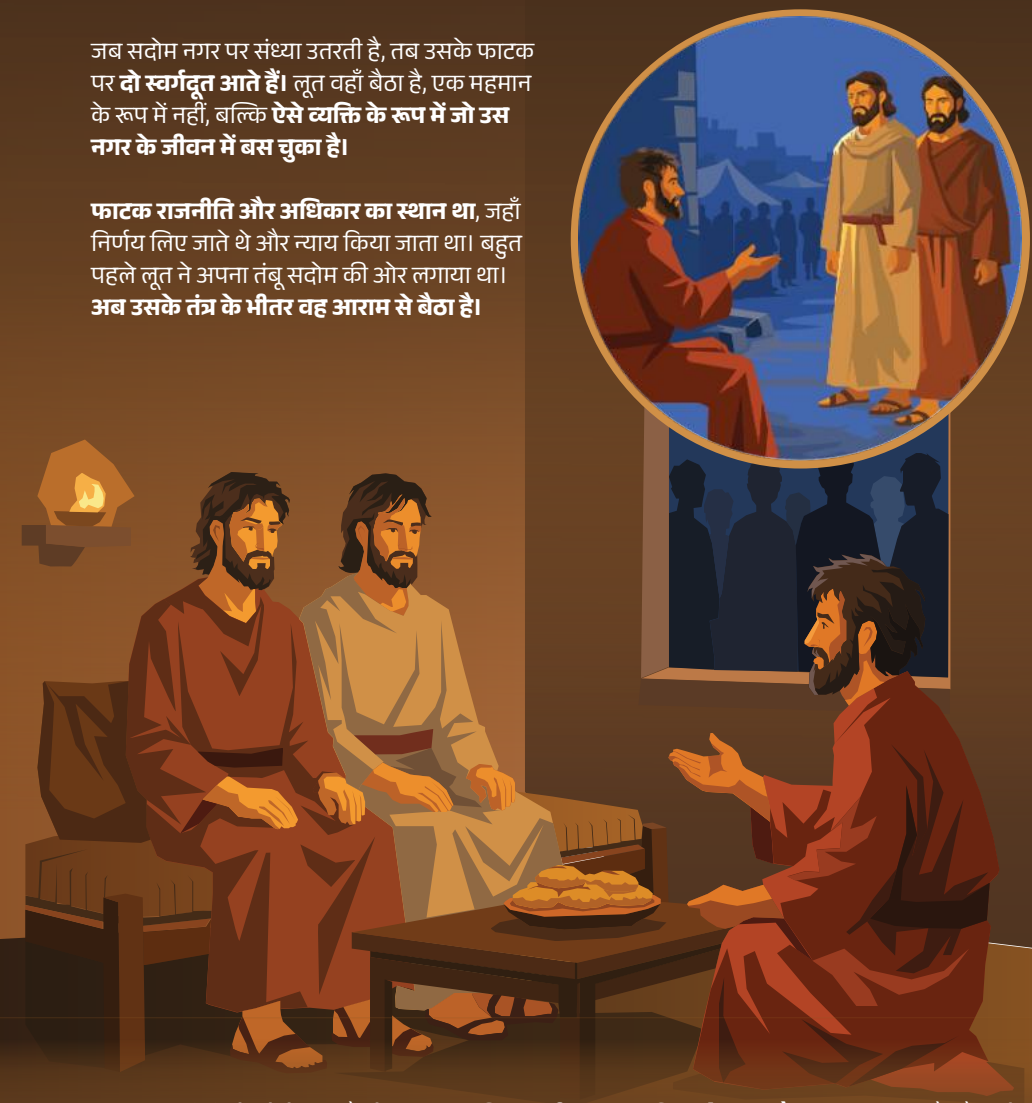


"आज बहुत से ऐसे लोग हैं जो उद्धार पाए हुए हो सकते हैं, लेकिन अपने जीवनशैली या अपने निवास स्थान के कारण वे अपना परिवार, अपना प्रभाव और अपनी गवाही खो देते हैं।"

- डॉ. जे. वर्नोन मैकगी

जब सदोम नगर पर संध्या उतरती है, तब उसके फाटक पर **दो स्वर्गदूत आते हैं।** लूत वहाँ बैठा है, एक महमान के रूप में नहीं, बल्कि **ऐसे व्यक्ति के रूप में जो उस नगर के जीवन में बस चुका है।**

**फाटक राजनीति और अधिकार का स्थान था**, जहाँ निर्णय लिए जाते थे और न्याय किया जाता था। बहुत पहले लूत ने अपना तंबू सदोम की ओर लगाया था। **अब उसके तंत्र के भीतर वह आराम से बैठा है।**



जब लूत उन अतिथियों को देखता है, तो **उसका आतिथ्यपूर्ण स्वभाव सक्रिय हो जाता है**। वह तुरंत उठता है और उन्हें सड़क पर न रुकने के लिए आग्रह करता है। वह जानता है कि अंधेरा होने के बाद शहर में कितना खतरा छिपा हुआ है।

हालाँकि उसका हृदय अभी भी सही और गलत को पहचानता है, लेकिन उसका जीवन ऐसे वातावरण में उलझ गया है जो उसकी **आत्मिक संवेदनशीलता को धीरे-धीरे कम कर देता है**। वह आने वाले अतिथियों के प्रति दया और उदारता दिखाता है, फिर भी उसने ऐसे स्थान पर बसने का निर्णय लिया है जो **परमेश्वर के साथ उसके चलने को खतरे में डालता है।**

## इसके बारे में सोचे

### सवाल 1

**“इसका क्या मतलब है कि आप किसी जगह शारीरिक रूप से मौजूद हों, लेकिन आत्मिक रूप से वहाँ असहज महसूस कर रहे हों?”**

## लागू करें

### सवाल 2

**अपने जीवन में उन वातावरणों या प्रभावों को लिखें जो धीरे-धीरे आपकी आत्मिक संवेदनशीलता को कम कर सकते हैं?**

### आध्यात्मिक सत्य

**परमेश्वर के साथ संगति उस वातावरण से कमजोर हो सकती है जिसे हम जीने के लिए चुनते हैं।**

**समझौता अक्सर चुपचाप शुरू होता है, दिखने से पहले ही।**

जैसे-जैसे रात करीब आती है, **सदोम की वास्तविक स्थिति प्रकट हो जाती है**। नगर के हर हिस्से से लोग - युवा और वृद्ध - लूत के घर को घेर लेते हैं। वे उसके अतिथियों को यौन शोषण के लिए माँगते हैं, और इससे नगर की नैतिक भ्रष्टता की गहराई उजागर हो जाती है। **पाप अब छिपा नहीं है; वह सार्वजनिक, आक्रामक और निर्लज्ज हो चुका है।**



लूत उनसे विनती करता है, उन्हें "भाइयों" कहकर पुकारता है, और निराशा में वह अपने अतिथियों की रक्षा करने के लिए एक दुखद नैतिक समझौता करते हुए अपनी बेटियों को उन्हें सौंपने की बात करता है।

**सदोम में वर्षों तक रहने से उसका निर्णय-समझ बिगड़ गया है।**

आपके न्याय के बारे में क्या? क्या आप मानते हैं कि उस समय लूत ने जो किया, वह सही था या गलत?



भीड़ उसके खिलाफ हो जाती है, जिससे यह साबित होता है कि नगर में उसका स्थान उसे कोई वास्तविक अधिकार या सुरक्षा नहीं देता।

**केवल दैवीय हस्तक्षेप ही उसे बचाता है।** स्वर्गदूत लूत को अंदर खींच लेते हैं और उन लोगों को अंधा कर देते हैं। परमेश्वर की दया के बिना, भीड़ द्वारा लूत की हत्या हो सकती थी।



> आज यह सोच आम हो गई है कि कोई व्यक्ति परमेश्वर कि संतान बनकर भी पाप में बना रह सकता है। लेकिन परमेश्वर कहता है कि यह असंभव है, और सदोम इसका प्रमाण है।

## आध्यात्मिक सत्य



**पाप के लंबे समय तक संपर्क में रहने से नैतिक समझ धुंधली हो जाती है।**



**समझौता विवेक और आत्मिक साहस को कमजोर करता है।**



**केवल परमेश्वर की दया ही हमें पाप के परिणामों से बचा सकती है।**

**स्वर्गदूत लूत को चेतावनी देते हैं कि न्याय आने वाला है** और उसे अपने परिवार को इकट्ठा करने के लिए कहते हैं। लूत अपने होने वाले दामादों के पास दौड़ता है और उनसे शहर छोड़कर भागने की विनती करता है, लेकिन वे उसे मज़ाक समझकर हँस देते हैं।

लूत बहुत समय से सदोम के लोगो के बीच रहा, इसलिए उसकी बातों का असर नहीं रह गया। **हालांकि वह सच बोलता है, लेकिन उसका जीवन उसकी बातों के साथ मेल नहीं खाता।**

**उसके समझौते ने उसकी आत्मिक प्रभावशीलता छीन ली है।** उसकी गवाही असरदार नहीं रही और वह किसी को भी परमेश्वर के लिए नहीं जीत पाया।



"यह व्यक्ति उस स्थान पर परमेश्वर की इच्छा से बाहर था, और उसके पास परमेश्वर के लिए कोई गवाही नहीं थी। उसने इस नगर में किसी को भी परमेश्वर के लिए नहीं जीता। यही सिद्धांत आज भी सच है: जब आप उनके स्तर पर गिर जाते हैं, तो आप उन्हें जीत नहीं पाते।"

## आध्यात्मिक सत्य



समझौतों से भरा जीवन आत्मिक अधिकार को कमजोर कर देता है।



प्रभाव केवल शब्दों से नहीं, बल्कि शब्दों और कर्मों की समानता से बनता है।



जब विश्वास छिपा होता है, तब गवाही अपनी शक्ति खो देती है।

## इसके बारे में सोचे

### सवाल 1

**हमारे जीवन में किए गए समझौते दूसरों के सामने हमारी गवाही को कैसे प्रभावित कर सकते हैं?**

# दया और विनाश

**उत्पत्ति 19:15-29**

जैसे-जैसे सुबह करीब आती है, स्वर्गदूत लूत को तुरंत निकलने के लिए कहते हैं। फिर भी, वह हिचकिचाता है। विनाश के दरवाजे पर होने के बावजूद, **लूत खुद को रोकने से संघर्ष करता है।** आखिरकार, दया दिखाते हुए, स्वर्गदूत उसका हाथ थाम लेते हैं और उसे बाहर ले जाते हैं।

लूत को भाग जाने, पीछे मुड़कर न देखने, और मैदान में कहीं भी न रुकते हुए पहाड़ों की ओर निकल जाने के लिए कहा जाता है। इसके बावजूद, वह हिचकिचाता है और पहाड़ों के बजाय पास के एक शहर में भाग जाने की अनुमति मांगता है, क्योंकि उसे डर है कि आपदा उसे अपनी चपेट में ले लेगी और वह मारा जाएगा।

परमेश्वर उसकी प्रार्थना स्वीकार करता है, और अद्भुत धैर्य तथा कृपा दिखाता है।

## आध्यात्मिक सत्य

**परमेश्वर की दया अक्सर हमें तब संभालती है जब हमारा विश्वास कमजोर होता है।**





**परमेश्वर बचा लेते हैं, तब भी जब हमारी आज्ञाकारिता पूर्ण नहीं होती।**

## लागू करें

**पहले लिखे हुए उन प्रभावों को एक बार फिर देखें। क्या परमेश्वर आपको उनसे दूर भागने के लिए कह रहे हैं? अब आप जो कदम उठा सकते हैं, उन्हें लिखिए।**

जैसे ही सूर्योदय होता है, स्वर्ग से सदोम और अमोरा पर आग और गंधक बरसने लगते हैं।

मैदान के शहर नष्ट हो जाते हैं। सदोम और अमोरा का अस्तित्व जिस किसी भी चीज़ से था, वह सब राख में बदल जाता है। फिर भी, न्याय के बीच, परमेश्वर अब्राहम को याद करते हैं और लूत को बचा लेते हैं, जब वे उन मैदानी शहरों को नष्ट कर रहे थे जहाँ लूत रहता था।

परमेश्वर का न्याय कभी भी जल्दबाजी या बिना सोचे-समझे नहीं होता। यह धैर्य, चेतावनी और दया की एक लंबी अवधि के बाद आता है। लेकिन जब परमेश्वर का न्याय आता है, तब वह पूर्ण होता है।

**दया हमेशा न्याय से पहले आती है।**

**परमेश्वर अपनी वाचा के लोगों को कभी नहीं भूलते।**

जब वे भाग रहे होते हैं, तो लूत की पत्नी पीछे मुड़कर देखती है। उसी क्षण, वह नमक का एक खंभा बन जाती है। उसका शरीर तो सदोम से बाहर निकल आया था, लेकिन उसका दिल वहीं रह गया था। वह उस चीज़ से प्रेम करती थी जिसे परमेश्वर नष्ट कर रहे थे।

उनकी कहानी सांसारिक मोह के विरुद्ध हर पीढ़ी के लिए एक चेतावनी है। एक विभाजित हृदय के साथ, जो संसार और परमेश्वर दोनों के बीच बंटा हो, **कभी भी आज्ञाकारिता का पालन नहीं किया जा सकता।**





"उसका दिल सदोम में था। उसका शरीर तो बाहर आ गया था, लेकिन वह अपना दिल वहीं पीछे छोड़ आई थी।"

## क्या इस संसार की चीज़ों को पीछे छोड़ने में आपका दिल टूटेगा?

**इस संसार की उन चीज़ों को लिखें जिनसे आप जुड़े हुए हैं।**

**संसार के प्रति प्रेम परमेश्वर की आज्ञाकारिता के साथ प्रतिस्पर्धा करता है।**

**पीछे मुड़कर देखना यह प्रकट करता है कि हृदय वास्तव में क्या चाहता है।**

भोर होते ही अब्राहम उठता है और मैदान की पूरी भूमि की ओर देखता है। वह एक भट्टी की तरह धुआं उठते हुए देखता है। हालाँकि वह लूत के लिए दुखी है, फिर भी उसका हृदय स्थिर है। उसने अपना जीवन सदोम में नहीं लगाया था। उसका उद्धार करने के लिए उसकी आशा परमेश्वर पर टिकी थी।

**चार जीवन हमारे सामने खड़े हैं:**



# लूत की अंतिम विपत्ति

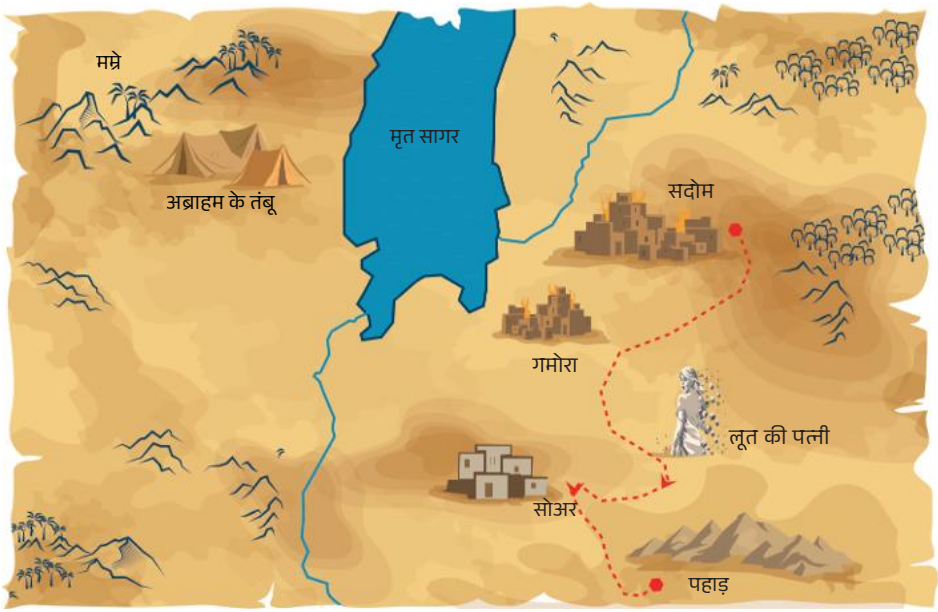
उत्पत्ति 19:30-38

## लूत जीवित तो बच जाता है, लेकिन उसका जीवन हानि से भरा हुआ है।




यह वचनांश शास्त्र में सबसे गंभीर समरणो में से एक है कि **उद्धार छुटकारा समझौते के परिणामों को मिटा नहीं देता।**

लूत सोअर में रहने से डरता था, इसलिए वह अपनी दो बेटियों के साथ पहाड़ों में एक गुफा में चला जाता है।




लूत की बेटियाँ, सदोम के नैतिक अंधकार से आकार पाकर, विश्वास करती हैं कि अब जीवित रहना परमेश्वर के प्रतिज्ञा के बजाय मानवीय प्रयास पर निर्भर होना चाहिए।

**परमेश्वर पर भरोसा करने के बजाय, उन्होंने चालाकी का रास्ता चुना।**

**इंतज़ार करने के बजाय, उन्होंने कदम उठाया।**

**विश्वास के बजाय, उन्होंने डर को चुना।**

और इसका परिणाम अनाचार, शर्म और पीढ़ियों का संघर्ष था।

इस मिलन से पैदा हुए बेटे, मोआब और बेन-अम्मी, आगे चलकर मोआबी और अम्मोनी बने, जो परमेश्वर के लोगों के लंबे समय तक दुश्मन रहे। यहाँ तक कि पीढ़ियों बाद भी, इस घटना के परिणाम महसूस किए जाते रहे।

**लूत की कहानी विद्रोह पर नहीं, बल्कि पछतावे पर समाप्त होती है।**

वह न्याय से तो बच गया, लेकिन उसने अपना प्रभाव खो दिया। बाइबल कभी भी लूत द्वारा किसी को परमेश्वर के पास लाने का उल्लेख नहीं करती है। यह कभी भी उसके वेदी बनाने का उल्लेख नहीं करती है। यह कभी भी परमेश्वर द्वारा उससे दोबारा बात करने का उल्लेख नहीं करती है। और फिर भी वह बच गया।

पतरस बाद में हमें बताता है कि लूत एक धर्मी मनुष्य था, जो अपने चारों ओर की दुष्टता से गहरा दुखी था (2 पतरस 2:6-8)। फिर भी, आज्ञाकारिता के बिना धार्मिकता, अलगाव के बिना दृढ़ विश्वास, और साहस के बिना विश्वास के विनाशकारी परिणाम हुए।

**वह बच तो गया, पर मुश्किल से। उसका परिवार, प्रभाव, और गवाही सब खत्म हो चुके थे।**

यद्यपि केवल उत्पत्ति 19 से इसे समझना कठिन है, लेकिन हम 2 पतरस 2:6-8 से जानते हैं कि लूत बच गया था। लेकिन हमारे जीवन में जिस पाप का सामना नहीं किया जाता, वह अंततः दुःख लेकर आता है।

यही इस वचनांश का गंभीर सत्य है:

**एक व्यक्ति उद्धार पा सकता है और फिर भी अपना जीवन बेकार कर सकता है।**



# इससे आपको क्या सीख मिली?

अपने जीवन में परमेश्वर की समझ को लागू करना।

# मैकगी का सुविचार



"उसका जीवन ऐसे बहुत से लोगों की तस्वीर है जो अपने जीवन के पापों का न्याय नहीं करते। वे उद्धार तो पाए हुए हैं, "तौभी मानो आग में से बचकर।" परमेश्वर ने ऐसे लोगों से, जिन्होंने अपना सब कुछ इस प्रकार एक ही टोकरी में रख दिया है, बहुत स्पष्ट रूप से कहा है कि यदि वे यहाँ अपने पाप का न्याय नहीं करेंगे, तो वह स्वयं उनका न्याय करेगा।"


अनसुलझा पाप
उत्पत्ति 20

# अनसुलझा पाप

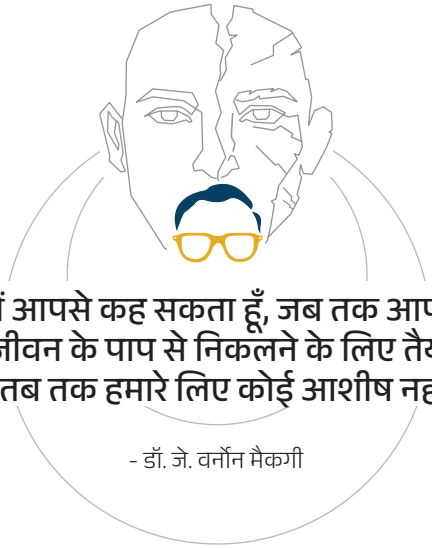
पवित्र और विश्वासयोग्य ईश्वर,

जब हम इस अध्याय में आते हैं, तो हमें ईमानदार हृदय दीजिए। हमें न केवल हमारी स्पष्ट असफलताएँ दिखाइए, बल्कि वे तौर-तरीके भी दिखाइए जिन्हें हम बहाने बनाना सीख चुके हैं। हमें अपने आप पर पूरा भरोसा रखना और उन सभी बातों से ईमानदारी से निपटना सिखाइए जो हमारे जीवन में आपके आशीष को रोकती हैं। हमें अपने सामने खराई से चलने के लिए तैयार कीजिए।

यीशु के नाम में, आमीन।

## आधा सच

**उत्पत्ति 20**



**"क्या मैं आपसे कह सकता हूँ, जब तक आप और मैं अपने जीवन के पाप से निकलने के लिए तैयार नहीं होते, तब तक हमारे लिए कोई आशीष नहीं है।"**

- डॉ. जे. वर्नोन मैकगी

## उत्पत्ति 20: विषय सारांश

### स्थिति

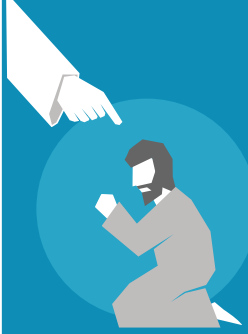
अब्राहम ने **फिर से वही झूठ बोला।**

सारा **एक बार फिर खतरे में पड़ गई।**

और **एक बार फिर, परमेश्वर को हस्तक्षेप करना पड़ा।**



### कार्यवाही



**परमेश्वर को इस समय अब्राहम को एक विशेष और उद्देश्यपूर्ण शिक्षा सिखाना चाहता था।**

### परिणाम

**अब्राहम फिर से पाप में गिर गया, और परमेश्वर ने ऐसा होने दिया।**

इससे पहले कि **परमेश्वर नया जीवन लाए।**

**उसने** अब्राहम के **पाप को सम्बोधित करता है**



उत्पत्ति 20, पहली नज़र में, एक ऐसा अध्याय लग सकता है जिसे हम छोड़ सकते हैं, जो बहुत जाना-पहचाना, असहज करने वाला, या यहाँ तक कि दोहराव वाला है। फिर भी परमेश्वर यहाँ एक उद्देश्य के साथ काम कर रहा है। अब्राहम की असफलता में भी, वह उसे तैयार कर रहा है, और अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने से पहले छिपे हुए पाप को प्रकाश में ला रहा है।

अब्राहम दक्षिण की ओर गरार में चला गया, उस स्थान से और दूर जहाँ परमेश्वर ने आखिरी बार उससे बात की थी। और एक बार फिर, डर उसके फ़ैसलों को आकार देने लगा। उसने गरार के राजा से कहा कि सारा उसकी बहन है। यह वही कहानी थी जो उसने सालों पहले मिस्र में कही थी। वही रणनीति। वही वही तर्क। वही डर।




यह कोई क्षणिक चूक नहीं थी;
**यह एक आदत थी।**

सारा, जो अब लगभग नब्बे वर्ष की है, उसे फिर से एक अन्य शासक के घराने में ले लिया जाता है। एक बार फिर, परमेश्वर हस्तक्षेप करता है, क्योंकि वह अपनी वाचा की प्रतिज्ञा को दूषित नहीं होने देगा।

यह आश्चर्यजनक है कि विश्वास के पुरुष अब्राहम यहाँ एक अन्यजाति राजा अबीमेलेक की तुलना में आत्मिक रूप से अधिक दुर्बल दिखाई देता है। अबीमेलेक नैतिक संवेदनशीलता दिखाता है, परमेश्वर की चेतावनी का उत्तर देता है, और सत्यनिष्ठा के साथ कार्य करता है। दूसरी ओर, अब्राहम यह कहकर अपना पक्ष रखता है कि उसने यह समझा था कि उस स्थान में परमेश्वर का भय नहीं है, और राजा सारा के कारण उसे मार डालेगा।

## परमेश्वर का भय मानने का क्या अर्थ है? आपको क्या लगता है कि इस क्षण में परमेश्वर का भय सबसे कम किसने माना?

वह स्वीकार करता है कि उसका यह धोखा जानबूझकर किया गया था। यह कोई अचानक लिया गया फैसला नहीं था। बहुत पहले, जब परमेश्वर ने पहली बार उसे बुलाया था, तब अब्राहम और सारा ने एक योजना बनाई थी कि वे जहाँ कहीं भी जाएँगे, वह कहेगी कि वह उसका भाई है।

यद्यपि अब्राहम और सारा आपस में रिश्तेदार थे, फिर भी उन्होंने यह छिपाया कि वे विवाहित थे। यह विश्वास से नहीं, बल्कि डर से बनाई गई एक योजना थी।खुद को बचाने के लिए गढ़ा गया एक आधा सच।



## क्या आपके जीवन में कोई आधा-सच है? क्या आपने स्वयं को यह विश्वास दिला दिया है कि वे सच हैं?

मैक्गी का मानना है कि यह अध्याय एक मुख्य कारण से मौजूद है: अब्राहम और सारा तब तक इसहाक को प्राप्त नहीं कर सकते थे जब तक कि इस पाप का समाधान नहीं हो जाता।

**यह सत्य आज भी कायम है।**

परमेश्वर **अपने वादों को वापस नहीं लेता**, लेकिन **वह उनके आनंद को तब तक के लिए टाल सकता है** जब तक कि उसके लोग **सत्य के मार्ग पर चलने के लिए** तैयार न हो जाएं।



पवित्र शास्त्र लगातार इस सिद्धांत को सिखाता है। **पश्चाताप के बाद आशीष मिलती है। अंगीकार के बाद पुन: स्थापना होती है। सत्य के बाद विकास होता है।** पौलुस बाद में कुरिन्थियों की कलीसिया को लिखता है कि जब विश्वासी खुद को जाँचने में असफल होते हैं, तो परमेश्वर दंड देता है - नष्ट करने के लिए नहीं, बल्कि पुन:स्थापित करने के लिए। (1 कुरिन्थियों 11:28-32)

**परमेश्वर के घर से ही न्याय शुरू होता है, क्योंकि परमेश्वर को अपने लोगों की इतनी परवाह है कि वह उन्हें वैसा ही नहीं रहने देना चाहते।**



यह अध्याय हमें शांतिपूर्वक स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर केवल बाहरी आज्ञाकारिता में रुचि नहीं रखता। वह हृदय की ईमानदारी चाहता है। वह **धैर्यवान** है, परन्तु साथ ही **उद्देश्यपूर्ण** भी है।

और कभी-कभी जो विलंब हम अनुभव करते हैं, वह **परमेश्वर द्वारा अपनी प्रतिज्ञा को रोककर रखना** नहीं होता, बल्कि इसलिए होता है कि परमेश्वर हमें किसी ऐसी बात को **समर्पित** कर देने के लिए बुला रहा होता है जिसे हम बहुत लंबे समय से ढो रहे हैं।

इसहाक के जन्म लेने से पहले, अब्राहम को उस चीज़ का सामना करना होगा जिससे वह बचता आ रहा है।



इससे पहले कि परमेश्वर हमारे जीवन में नया फल लाए, वह अक्सर हमसे अपनी चिंताओं को उसे सौंप देने के लिए कहता है।

## इसके बारे में सोचे

### सवाल 1

**आप अपने जीवन में कहाँ परमेश्वर पर पूरी तरह भरोसा करने के बजाय डर के आगे घुटने टेक रहे हैं?**

### सवाल 2

**क्या आपके जीवन में ऐसे पापमय तरीके या समझौते हैं जिन्हें आपने इसलिए स्वीकार कर लिया है क्योंकि वे जाने-पहचाने या सुरक्षित महसूस होते हैं?**

## लागू करें

### सवाल 3

**परमेश्वर आपके जीवन में ऐसे कौन से आधे सचों या पापों का सामना करने के लिए कह रहा है, जिनके आगे डर के कारण घुटने टेकने के बजाय आप उनका सामना करें, ताकि आप उसकी आशीष पा सकें?**

### जो लागू करना है उसका चित्र बनाये

# इससे आपको क्या सीख मिली?

अपने जीवन में परमेश्वर की समझ को लागू करना।

# मैक्गी का सुविचार



"कलीसिया और कई विश्वासियों के जीवन से आशीषों को रोक दिया गया है क्योंकि हम अपने जीवन के पापों से निपटने के लिए तैयार नहीं हैं। उत्पत्ति की पुस्तक के बीसवें अध्याय में यहाँ एक बहुत बड़ा आत्मिक सबक है।"


प्रतिज्ञा की पूर्ति
उत्पत्ति 21

# प्रतिज्ञा की पूर्ति

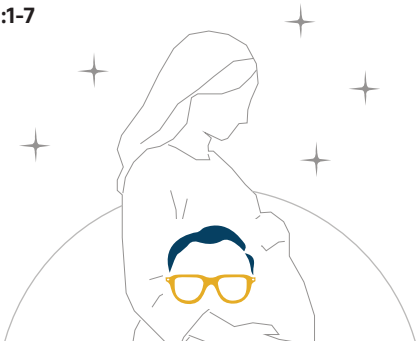
प्रिय परमेश्वर,

हम आपका धन्यवाद करते हैं कि आप अपना हर एक वादा पूरा करते हैं। जब हम इस अध्याय का अध्ययन करते हैं, तो अपनी मर्जी के समय, मृत्यु में से जीवन लाने की अपनी सामर्थ्य, और हमें आत्मिक परिपक्वता तथा आज्ञाकारिता की ओर बुलाने में अपनी बुद्धि को देखने में हमारी सहायता करें। हमें आप पर पूरी तरह भरोसा करना, आत्मिक बालपन से आगे बढ़ना, और आपकी प्रतिज्ञाओं की स्वतंत्रता में चलना सिखाएं।

यीशु के नाम में, आमीन।

## इसहाक का जन्म

**उत्पत्ति 21:1-7**



**"रोमियों के चौथे अध्याय में पौलुस लिखता है कि अब्राहम ने 'अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न हुआ' (रोमियों 4:19)। परमेश्वर मृत्यु में से जीवन उत्पन्न करता है; यह एक चमत्कारिक जन्म है।"**

- डॉ. जे. वर्नोन मैकगी



उत्पत्ति 21
**की शुरुआत एक लंबे समय से प्रतीक्षित प्रतिज्ञा के पूरा होने के** साथ होती है।

पिछले अध्याय में, **प्रतिज्ञा किए हुए पुत्र के जन्म** लेने से पहले अब्राहम के पाप से निपटना ज़रूरी था।

वह समय आ गया था। **यहोवा ने सारा की सुधि ली**, जैसा उसने कहा था, और उसके लिए ठीक वैसा ही किया जैसा **उसने वचन दिया था।** नियत समय पर **सारा ने गर्भधारण किया** और अपनी **वृद्धावस्था में अब्राहम के लिए एक पुत्र को जन्म दिया।** परमेश्वर ने अपना वचन पूरा किया।

**इसहाक के जन्म** और **मसीह के जन्म** के बीच एक **अद्भुत समानता है।** इसहाक का जन्म उसी ठहराए हुए समय पर हुआ था जिसकी **प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की थी।** ठीक उसी तरह, पवित्र शास्त्र हमें बताता है कि **जब समय पूरा हो गया, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा** (गलातियों 4:4)।

अब्राहम ने **निर्देश** के अनुसार अपने पुत्र का नाम इसहाक रखा, और **परमेश्वर की आज्ञा के पालन** में आठवें दिन उसका **खतना** किया।

अब्राहम **एक सौ वर्ष का था,** और सारा ने कहा, **"परमेश्वर ने मुझे प्रफुल्लित किया है; इसलिए सब सुननेवाले भी मेरे साथ प्रफुल्लित होंगे।"** (उत्पत्ति 21:6)। जो कभी **असम्भव प्रतीत** होता था, वह अब **वास्तविकता** बन गया था।



यह एक **चमत्कारिक जन्म** था, एक ऐसा जन्म जो **प्रकृति के विपरीत** था। अब्राहम के शरीर को मरे हुए के समान और सारा के गर्भ को **बाँझ** बताया गया था (रोमियों 4:19)। फिर भी **मृत्यु** में से, **परमेश्वर जीवन लेकर आया। मसीह के कुंवारी से जन्म लेने के** बहुत समय पहले ही, **परमेश्वर ने मानवजाति को** अलौकिक कार्य के लिए यह दिखाकर तैयार किया कि **जहाँ कुछ भी नहीं है, वहाँ भी वह जीवन उत्पन्न कर सकता है।**

**अब्राहम और सारा** दोनों को इस स्थान पर आना पड़ा जहाँ उन्होंने यह **पहचान** लिया कि वे स्वयं **कुछ नहीं** कर सकते थे। इसहाक का जन्म किसी **मानवीय उपलब्धि** का परिणाम नहीं, बल्कि **दैवीय हस्तक्षेप** था।

**यह पूरी तरह से परमेश्वर का कार्य था।**

## इसहाक, मसीह की एक परछाई के रूप में

इसहाक और मसीह के बीच की समानताएँ असाधारण हैं:



दोनों जन्मों की प्रतिज्ञा की गई थी।



दोनों में प्रतिज्ञा और उसकी पूर्ति के बीच एक लंबा अंतराल था।



दोनों घोषणाएँ असम्भव प्रतीत होती थीं।




दोनों पुत्रों के नाम उनके जन्म से पहले ही रख दिए गए थे।



दोनों का जन्म परमेश्वर के ठहराए हुए समय पर हुआ था।



दोनों के जन्म चमत्कारिक थे।



दोनों पुत्र अपने पिताओं के लिए आनंद का कारण थे।



दोनों ही मृत्यु तक आज्ञाकारी रहे।



एक ऐसी कोख से इसहाक का जन्म होना जिसे 'मृत' मान लिया गया था, पुनरुत्थान को दर्शाता है - मृत्यु में से जीवन का निकलना।

परमेश्वर ने बिना किसी तैयारी के अचानक से कुंवारी से जन्म की घटना को प्रस्तुत नहीं किया। इसहाक और अन्य चमत्कारिक जन्मों के माध्यम से, वह मानव जाति को यह समझने के लिए तैयार कर रहे थे कि वह कैसे कार्य करते हैं।

# इसहाक
# यीशु की एक परछाई के रूप में





## इसके बारे में सोचें

### सवाल 1

**ऐसा क्या है जो इसहाक के जन्म को मानवीय रूप से संभव बनाने के बजाय स्पष्ट रूप से अलौकिक बनाता है?**

### सवाल 2

**उत्पत्ति 21:1 में जो यह दोहराया गया है कि 'जैसा उसने कहा था... जैसा उसने बोला था', वह परमेश्वर के चरित्र के बारे में क्या प्रकट करता है?**

## सवाल 3

**ऐसी कौन-सी परिस्थिति है जो मुझे "मृत" प्रतीत होती है, जिसे मुझे अपने प्रयासों के बजाय परमेश्वर की सामर्थ्य को सौंप देना चाहिए ?**

## जो लागू करना है उसका चित्र बनाये

# हागार और इश्माएल को निकाल दिया गया

**उत्पत्ति 21:8-33**

> वह समय आ जाता है जब आपको यह निर्णय लेना ही पड़ता है कि आप किस स्वभाव के अनुसार जीने जा रहे हैं। प्रभु के प्रति समर्पित होने के इस मामले में आपको एक दृढ़ निश्चय करना होगा। आपको या तो पवित्र आत्मा को अपने जीवन में कार्य करने की अनुमति देनी होगी, या फिर आपको अपना पूरा जीवन शरीर के नियंत्रण में बिताना होगा। परमेश्वर की संतान के लिए कोई तीसरा विकल्प नहीं है।



घर का आनन्द शीघ्र ही **संघर्ष** में बदल गया जब सारा ने इश्माएल को ठट्ठा करते हुए देखा। इसहाक के आगमन ने इश्माएल के वास्तविक चरित्र को प्रकट कर दिया।

यह घटना विश्वासी के भीतर **पुरानी प्रकृति और नई प्रकृति** के बीच होने वाले संघर्ष को दर्शाती है। परिवर्तन से पहले मनुष्य **पुराना स्वभाव के नियंत्रण में** जीवन बिताता है। परन्तु जब वह नया जन्म पाता है, तो उसे **एक नया स्वभाव प्राप्त होती है और संघर्ष आरम्भ हो जाता है। शरीर और आत्मा आपस में सहयोग नहीं करते।**

विश्वासी के लिए कोई **तीसरा विकल्प नहीं** है। **उसे यह चुनना होता है कि उस पर किस स्वभाव का शासन होगा।** दोनों के अनुसार एक साथ जीवन जीने का प्रयास अस्थिरता उत्पन्न करता है। **विपरीत दिशाओं में खींचने वाले दो घोड़ों की तरह, शरीर और आत्मा साथ-साथ नहीं चल सकते। विश्वासी को परमेश्वर के अधीन होना चाहिए और पवित्र आत्मा को वह कार्य करने देना चाहिए जिसे व्यवस्था** कभी पूरा नहीं कर सकी।




जब मेरा शरीर और पवित्र आत्मा विपरीत दिशाओं में खींचते हैं, तो परमेश्वर के प्रति पूरी तरह समर्पित होने के लिए मैं कौन से व्यावहारिक कदम उठा सकता हूँ?

सारा ने मांग की कि **हागार** और **उसके बेटे** को बाहर निकाल दिया जाए, और यह घोषणा की कि इश्माएल **इसहाक के साथ उत्तराधिकार में भाग** नहीं पाएगा।हालाँकि यह बात अब्राहम के लिए बहुत **दुखदायी** थी, फिर भी परमेश्वर ने इसकी पुष्टि करते हुए कहा कि, **"इसहाक ही से तेरा वंश कहलाएगा"** (पद 12)। **मानवीय युक्ति के द्वारा जन्मा पुत्र, दैवीय प्रतिज्ञा के द्वारा** जन्मे **पुत्र का स्थान नहीं ले सकता था।**

**अब्राहम ने आज्ञा मानी।** वह सुबह **जल्दी उठा** और उसने **हागार और इश्माएल को रोटी और पानी देकर** विदा कर दिया। जब उनका पानी **जंगल में खत्म हो गया,** तो **हाजरा रोने लगी,** क्योंकि वह अपने बेटे को मरते हुए नहीं देखना चाहती थी। लेकिन **परमेश्वर ने उस लड़के की आवाज़ सुनी। परमेश्वर के दूत ने स्वर्ग से पुकारकर** उसे ढाढस बंधाया। परमेश्वर ने उसकी आँखें खोलीं, **और उसने पानी का एक कुआँ देखा।** इश्माएल **जीवित रहा, बड़ा हुआ और जंगल में रहने लगा।**

यद्यपि इसके बाद पवित्रशास्त्र उसके वंश का विस्तार से अनुसरण नहीं करता, फिर भी उसके वंशज बने रहते हैं। **इश्माएल का चरित्र उसके वंशजों के इतिहास का पूर्वसंकेत देता है-**ऐसे लोग जो अक्सर संघर्ष में रहे। अलग किए जाने पर भी परमेश्वर उस पर दया दिखाता है। वह घोषणा करता है कि वह इश्माएल से एक महान राष्ट्र उत्पन्न करेगा।



## बेर्शेबा में अब्राहम और अबीमेलेक

यह अध्याय **अब्राहम के जीवन** के एक और घटना के साथ समाप्त होता है। **जब अबीमलेक ने देखा** कि अब्राहम जो कुछ भी करता है उसमें **परमेश्वर** उसके साथ है, तो उसने अब्राहम के साथ एक **संधि करने की इच्छा जताई।** वह यह **आश्वासन चाहता था** कि अब्राहम उसके और उसके **वंशजों** के साथ **विश्वासयोग्यता से व्यवहार करेगा।** बेर्शेबा में एक वाचा बांधी गई। **अब्राहम ने वहाँ एक झाऊ का वृक्ष लगाया** और **यहोवा, और यहोवा, अर्थात् सनातन परमेश्वर, के नाम से पुकारा।**

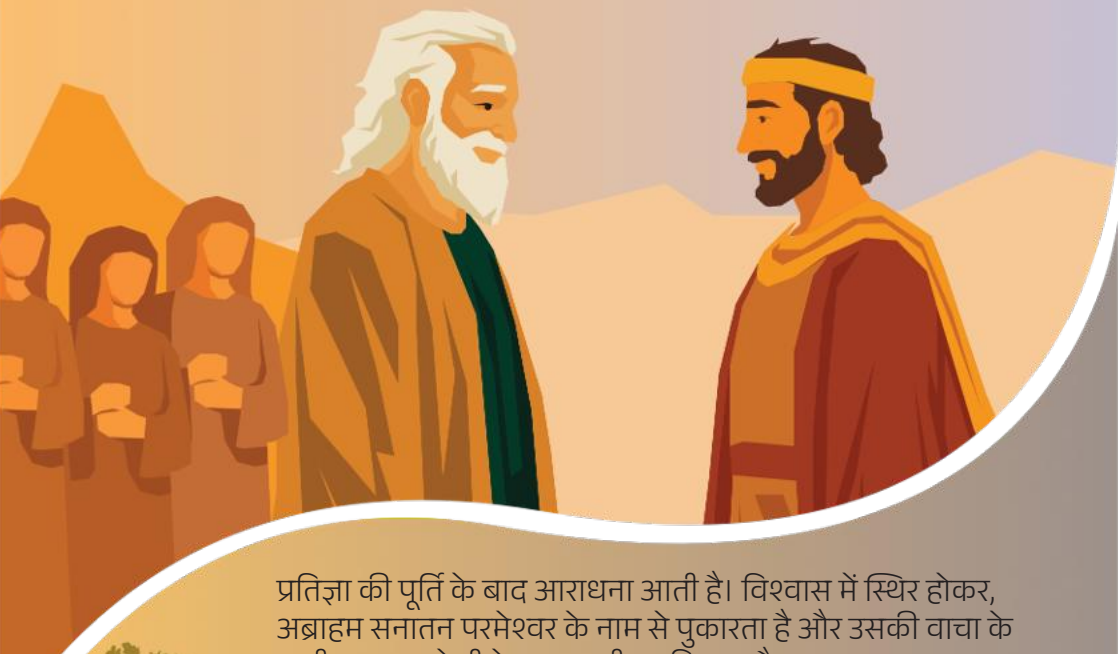
यद्यपि **परमेश्वर ने उससे इस भूमि का वादा किया था,** फिर भी अब्राहम इसमें एक **परदेशी और यात्री बनकर रहा। वह पलिश्तियों के देश में बहुत दिनों तक** प्रवासी होकर रहा। प्रतिज्ञा निश्चित थी, **वाचा सुरक्षित** थी। फिर भी अब्राहम **एक मुसाफिर की तरह जिया, और उस परमेश्वर पर भरोसा रखता रहा** जो **नियत समय पर अपने वचन को पूरा करता है।**

क्या मेरे जीवन और मेरे नेतृत्व के ढंग को देखकर दूसरे लोग पहचान पाएंगे कि परमेश्वर मेरे साथ है?

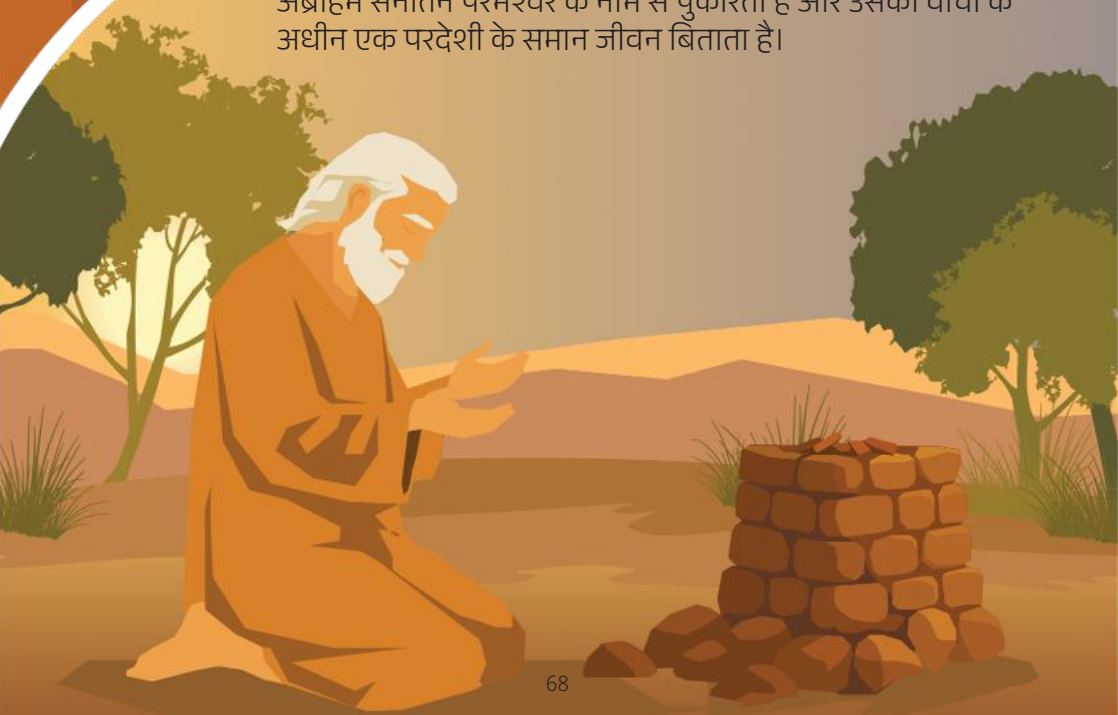


किन बातों में मैं ऐसा जीवन जी रहा हूँ मानो यह संसार स्थायी हो, बजाय इसके कि मैं परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा रखने वाले एक यात्री के समान जीवन बिताऊँ?

जब किसी जीवन पर परमेश्वर का हाथ होता है, तब राष्ट्र भी उस पर ध्यान देते हैं। शांति से जिया गया एक गवाही भरा जीवन, शब्दों से कहीं अधिक ज़ोर से बोलता है।



प्रतिज्ञा की पूर्ति के बाद आराधना आती है। विश्वास में स्थिर होकर, अब्राहम सनातन परमेश्वर के नाम से पुकारता है और उसकी वाचा के अधीन एक परदेशी के समान जीवन बिताता है।



## इसके बारे में सोचें और लागू करें

### सवाल 1

**इस अध्याय में, परमेश्वर की प्रतिज्ञा से हटकर कार्य करने का अब्राहम और सारा का पहले का निर्णय परिवार के भीतर गहरे दुःख, विभाजन और अलगाव का कारण बना।**

**हागार और इश्माएल से जुड़ी घटनाएँ यह कैसे प्रकट करती हैं कि पाप, क्षमा किए जाने के बाद भी, अपने पीछे ऐसे स्थायी परिणाम छोड़ सकता है जो न केवल हमें बल्कि हमारे आस-पास के लोगों को भी प्रभावित करते हैं?**

### सवाल 2

**मैक्गी इश्माएल और इसहाक की तुलना एक विश्वासी के भीतर पुराना स्वभाव और नया स्वभाव के बीच होने वाले संघर्ष से करते हैं।**

**यह चित्रण हमें अपने जीवन को संचालित करने के लिए सही स्वभाव का चुनाव करने की हमारी ज़िम्मेदारी के बारे में क्या सिखाता है, और तटस्थता या समझौता करना एक विकल्प क्यों नहीं है?**

# इससे आपको क्या सीख मिली?

अपने जीवन में परमेश्वर की समझ को लागू करना।

# मैक्गी का सुविचार



"एक विश्वासी होने के नाते आप अपनी दोनों तरह के स्वभावों के साथ तालमेल बिठाकर नहीं रह सकते। आपको एक निर्णय लेना ही होगा।याकूब कहते है "वह व्यक्ति दुचित्ता है, और अपनी सारी बातों में चंचल है"(याकूब 1:8)।

यह आज कई मसीहियों के बीच अस्थिरता और असुरक्षा को स्पष्ट करता है। वे संसार के साथ भी चलना चाहते हैं, और प्रभु के साथ भी चलना चाहते हैं। वे आत्मिक रूप से खंडित-मानसिकता शिजोफ्रेनिक के शिकार हैं, जो दोनों करने की कोशिश कर रहे हैं, और आप ऐसा नहीं कर सकते।"


विश्वास की परीक्षा
उत्पत्ति 22:1- 23:30

# विश्वास की परीक्षा

हे स्वर्गिक पिता,

हमें सिखाएँ कि सच्चा विश्वास कैसा होता है। जब हम आपकी राहों को न समझ पाएँ, तब भी आप पर भरोसा रखने में हमारी मदद करें। हमें ऐसा हृदय दें जो पूरी तरह से आज्ञाकारी हो और यह विश्वास रखे कि आप हमेशा हमारी ज़रूरतें पूरी करेंगे। अपने वचन के द्वारा हमें सामर्थ्य दें।

आमीन।

## परीक्षा और यात्रा

**उत्पत्ति 22:1-8**



"अपने पुत्र को अर्थात् अपने एकलौते पुत्र इसहाक को, जिससे तू प्रेम रखता है, संग लेकर मोरिय्याह देश में चला जा, और वहाँ उसको एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊँगा होमबलि करके चढ़ा।"

**उत्पत्ति 22:2-3**

इस अध्याय में परमेश्वर सातवीं और अंतिम बार अब्राहम के सामने प्रकट होते हैं, और वे अब्राहम के जीवन की सबसे बड़ी परीक्षा प्रस्तुत करते हैं।

**उत्पत्ति 22:2 में दिए गए विशेष बल पर ध्यान दें।**

तेरा **पुत्र**

तेरा **एकलौता पुत्र**

जिससे तू **प्रेम रखता है**





## यीशु

(प्रतिज्ञा किए हुए पुत्र की पूर्णता)

**पिता का प्रिय पुत्र**

"और यह आकाशवाणी हुई, **"यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।""**
(मत्ती 3:17)

**परमेश्वर पिता ने** जगत के उद्धार के लिए **स्वेच्छा से अपने पुत्र को दे दिया।**

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना 3:16)

## इसहाक

(अब्राहम का प्रतिज्ञा का पुत्र)

**अब्राहम का प्रिय पुत्र**

अपने पुत्र को अर्थात् अपने एकलौते पुत्र इसहाक को, जिससे तू प्रेम रखता है, संग लेकर मोरिय्याह देश में चला जा, और वहाँ उसको एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊँगा होमबलि करके चढ़ा..." (उत्पत्ति 22:2)

**परमेश्वर ने अब्राहम की परीक्षा ली** उसने उसके पुत्र इसहाक को बलि चढ़ाने के लिए कहा।

"इन बातों के पश्चात् ऐसा हुआ कि परमेश्वर ने, अब्राहम से यह कहकर उसकी परीक्षा की, "हे अब्राहम!" उसने कहा, "देख, मैं यहाँ हूँ।"" (उत्पत्ति 22:1)

**यीशु को यरुशलम के निकट क्रूस पर चढ़ाया गया था,** वह स्थान जिसे ईश्वर ने बलिदान के लिए चुना था।

'तब वे यीशु को ले गए। और वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया, जो 'खोपड़ी का स्थान' कहलाता है और इब्रानी में 'गुलगुता'। '
(यूहन्ना 19:17)

**मसीह का बलिदान परमेश्वर की उद्धारकारी योजना का एक भाग था, यद्यपि बहुत से लोग उसे समझ नहीं सके।**

**यीशु का पुनरुत्थान इस बात का प्रमाण था कि परमेश्वर मृत्यु पर सामर्थ्य रखता है।**

"परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया: (प्रेरितों के काम 2:24)

**क्रूस का यह बलिदान अंततः पिता और पुत्र के बीच का था,** जिसने संपूर्ण मानवता के लिए मुक्ति (उद्धार) को पूरा किया। **यीशु अपना क्रूस स्वयं** उठाकर बलिदान के स्थान तक ले गए।

**यीशु स्वयं अपना क्रूस उठाकर बलिदान स्थल तक ले गए।**

'तब वे यीशु को ले गए। और वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया, जो 'खोपड़ी का स्थान' कहलाता है और इब्रानी में 'गुलगुता'।'
(यूहन्ना 19:17)

**मसीह ने पाप के न्याय को स्वयं सह लिया** अपने बलिदान के द्वारा।

इसहाक को मोरिय्याह देश में ले जाया गया, जिसके विषय में यह माना जाता है कि यह वही क्षेत्र है जहाँ आगे चलकर यरूशलेम नगर स्थापित हुआ।

"...मोरिय्याह देश में चला जा,... उस पहाड़ पर, जिसके विषय में मैं तुझे बताऊँगा।"
(उत्पत्ति 22:2)

**अब्राहम परमेश्वर की आज्ञा को पूरी तरह नहीं समझ पाया, फिर भी उसने परमेश्वर के चरित्र पर भरोसा किया और उसकी आज्ञा का पालन किया।**

**अब्राहम का विश्वास था कि परमेश्वर इसहाक को मरे हुओं में से जिला सकते हैं।**

"क्योंकि उसने मान लिया, कि परमेश्वर सामर्थी है, कि उसे मरे हुओं में से जिलाए, इस प्रकार उन्हीं में से दृष्टान्त की रीति पर वह उसे फिर मिला।"
(इब्रानियों 11:19)

**मोरीयाह पर्वत के इस बलिदान में केवल अब्राहम और इसहाक ही शामिल थे, जो इस भेंट के गहरे व्यक्तिगत और आत्मिक स्वरूप को दर्शाता है।**

**इसहाक ने बलिदान के लिए लकड़ियाँ स्वयं उठाईं।**

"तब अब्राहम ने होमबलि की लकड़ी ले अपने पुत्र इसहाक पर लादी..."
(उत्पत्ति 22:6)

**अब्राहम ने आग और छुरी को अपने हाथ में लिया,** जो कि न्याय और बलिदान के प्रतीक हैं।

"...और आग और छुरी को अपने हाथ में लिया; और वे दोनों एक साथ चल पड़े।"
उत्पत्ति (22:6)

# विश्वास प्रमाणित और परमेश्वर का प्रावधान

**उत्पत्ति 22:9-19**

## यीशु

(प्रतिज्ञा किए हुए पुत्र की पूर्णता)

**यीशु ने स्वेच्छा से** पिता की इच्छा के अधीन होकर स्वयं को समर्पित कर दिया, मृत्यु का सामना करते हुए भी।

**"यह कहते हुए , 'हे पिता यदि तू चाहे तो इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले, फिर भी मेरी नहीं परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो।"**
**(लूका 22:42)**

मसीह ने स्वयं को समर्पित कर दिया पाप के लिए बलिदान के रूप में।

**क्रूस मसीह के सर्वोच्च बलिदान का प्रतीक था।**

यीशु ने अपनी आज्ञाकारिता के द्वारा परमेश्वर की उद्धारकारी योजना के उद्देश्य को पूरा किया।



## इसहाक

(अब्राहम का प्रतिज्ञा का पुत्र)

**इसहाक ने स्वेच्छा से** अब्राहम के सामने खुद को **समर्पित** कर दिया।

अब्राहम ने वेदी बनाई और इसहाक को लकड़ियों पर लिटा दिया। इसहाक संभवतः लगभग **33-37 वर्ष** के थे और विरोध करने के लिए पर्याप्त रूप से बलवान थे, फिर भी उन्होंने अपने पिता की इच्छा के सामने आत्मसमर्पण कर दिया।



इसहाक ने खुद को वेदी पर रखे जाने दिया, जो अपने पिता और अंततः परमेश्वर के प्रति उनके गहरे भरोसे को दर्शाता है।
अंततः ईश्वर में।

अब्राहम का छुरी उठाना सर्वोच्च संकट का क्षण था।

अब्राहम पहले ही विश्वास की कई परीक्षाओं का सामना कर चुके थे:

- ऊर नगर को छोड़ना
- लूत से अलग होना
- इश्माएल को विदा करना

# परमेश्वर का प्रावधान: स्थानापन्न बलिदान

**यीशु मानवजाति के पापों के बदले सच्चे स्थानापन्न बने।**

"देखो, **यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत के पाप हरता है।"**
(यूहन्ना 1:29)

**मसीह पापियों के स्थान पर मरे, और उन्होंने उस उद्देश्य को पूरा किया जो पहले के बलिदानों में केवल एक प्रतीक मात्र था।**

**परमेश्वर के मेम्ने की भविष्यवाणी क्रूस की घटना से बहुत पहले ही कर दी गई थी।**

**इसहाक के बदले एक मेढ़ा दिया गया।**

"तब अब्राहम ने आँखें उठाईं, और क्या देखा, कि उसके पीछे एक मेढ़ा अपने सींगों से एक झाड़ी में फँसा हुआ है; अतः अब्राहम ने जाकर उस मेढ़े को लिया, और अपने पुत्र के स्थान पर होमबलि करके चढ़ाया।"
(उत्पत्ति 22:13)

**वह मेढ़ा इसहाक के स्थान पर मारा गया, और इस तरह स्थानापन्न बलिदान के सिद्धांत की शुरुआत हुई।**

उत्पत्ति 22:8 में अब्राहम का कथन भविष्यद्वाणी के रूप में मसीह की ओर संकेत करता था।

"मेरे बेटे, परमेश्वर होम-बलि के लिए मेम्ने का प्रबंध आप ही करेगा।"

यह कथन भविष्यवाणी के रूप में मसीह की ओर संकेत करता था।

देखो!
यह परमेश्वर का मेम्ना है,
जो जगत के पाप हरता है।"
यूहन्ना 1:29



अब्राहम ने उस स्थान का नाम रखा: यहोवा यिरे, जिसका अर्थ है "यहोवा प्रबंध करेगा"।

इसके बाद परमेश्वर ने अपनी वाचा की पुनः पुष्टि की।

**"और पृथ्वी की सारी जातियाँ अपने को** तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी..."
उत्पत्ति 22:18

## इसके बारे में सोचें

### सवाल 1

**परमेश्वर ने अब्राहम की ऐसी पीड़ादायक रीति से परीक्षा क्यों ली? रोमियों 4:1–3 और याकूब 2:21 पढ़ें।**

### सवाल 2

**अब्राहम का तुरंत आज्ञा मानना उसके आत्मिक विकास के बारे में क्या पता चलता है?**

## लागू करें

### सवाल 3

**परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने के विषय में आपका अनुभव क्या रहा है?**



"अदन की वाटिका से लेकर मसीह के क्रूस तक, प्रतिस्थापन के रूप में हमेशा उस छोटे से मेम्ने का बलिदान दिया जाता रहा, जो आने वाले मसीह की ओर संकेत करता था-क्योंकि परमेश्वर ने मानव-बलि की अनुमति कभी नहीं दी। परंतु, जब स्वयं उसका पुत्र इस जगत में आया, तो वह पुत्र हमारे पापों के लिए क्रूस पर गया और उसने अपने प्राण दे दिए।"

# सारा की मृत्यु और अब्राहम का शोक

**उत्पत्ति 23:1-20**

**उत्पत्ति 23 की शुरुआत सारा की मृत्यु के विवरण से होती है:**

सारा **127 वर्ष** जीवित रही। जब इसहाक का जन्म हुआ, तब वह **नब्बे वर्ष** की थी (उत्पत्ति 21:5), जिसका अर्थ है कि उसकी मृत्यु के समय इसहाक लगभग **सैंतीस वर्ष** का था।



उसकी मृत्यु कनान देश के **हेब्रोन** में हुई, उसी भूमि में जिसका परमेश्वर ने अब्राहम से वादा किया था (उत्पत्ति 12:7; उत्पत्ति 13:15)।

अब्राहम ने अपनी पत्नी के लिए गहरा **शोक** मनाया। फिर भी दुःख के इस क्षण में, एक उल्लेखनीय परिस्थिति सामने आती है। अब्राहम के पास उस **भूमि का कोई भी हिस्सा नहीं था** जहाँ परमेश्वर ने उसके वंशजों के रहने का वादा किया था। **उसे उसी भूमि में** सारा के लिए एक कब्र खरीदनी पड़ी जिसका वादा **परमेश्वर ने उससे किया था।**

इसके बाद हम देखते हैं कि कैसे अब्राहम ने वहाँ के निवासियों से **कब्र के लिए भूमि का अनुरोध किया। उन्होंने उसका आदर करते हुए** वह भूमि उसे उपहार के रूप में देने की **पेशकश की**, परन्तु अब्राहम ने **उचित मूल्य पर बातचीत की** और उनसे वह भूमि खरीद ली।

अब्राहम **समय से पहले उस भूमि पर अधिकार नहीं करना चाहता था।** जब तक परमेश्वर ने अपना वादा पूरा नहीं किया, तब तक अब्राहम ने अपनी **ज़रूरत की चीज़ें खरीदीं और परमेश्वर के समय का इंतज़ार किया।**

सारा का इस भूमि में दफ़नाया जाना **इस बात को प्रकट करता है कि अब्राहम को दृढ़ विश्वास था कि इस भूमि के संबंध में परमेश्वर की प्रतिज्ञा एक दिन अवश्य पूरी होगी।**



> परमेश्वर की दो महान आशाएँ और दो महान उद्देश्य हैं। उनका एक पृथ्वी से जुड़ा उद्देश्य है, और उनका एक स्वर्ग से जुड़ा उद्देश्य है।

बाद में, यीशु ने अपने चेलों के सामने **एक और प्रतिज्ञा प्रकट की:**

**"तुम्हारा मन व्याकुल न हो , तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं... मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ।** (यूहन्ना 14:1-3)

यह प्रतिज्ञा **मसीह में विश्वास करने वालों के लिए तैयार की गई स्वर्गीय आशा को** प्रकट करती है।

इस प्रकार, सारा का दफ़नाया जाना केवल अंतिम संस्कार की एक व्यवस्था नहीं थी, बल्कि यह परमेश्वर के भविष्य के वादों और पुनरुत्थान की आशा की ओर संकेत करने वाला विश्वास का एक कार्य था।



## इसके बारे में सोचे

### सवाल 1

**अपने आपको "परदेशी और प्रवासी" कहकर अब्राहम हमें इस संसार में विश्वास के द्वारा जीवन जीने के बारे में क्या सिखाता है?**

### सवाल 2

**अब्राहम का धैर्य अपने हाथों में मामले को लेने के बजाय परमेश्वर के समय पर उसके भरोसे को कैसे दर्शाता है?**

**सोचिए कि आप परमेश्वर पर भरोसा करने के बजाय किन तरीकों से मामलों को अपने हाथों में ले लेते हैं।**

## लागू करें

### सवाल 3

**परमेश्वर के भविष्य संबंधी हमारे आशा-भरे विश्वास से आज हमारा जीवन किन-किन प्रकारों से प्रभावित होता है? उन्हें सूचीबद्ध करें।**

### जो लागू करना है उसका चित्र बनाये

# इससे आपको क्या सीख मिली?

अपने जीवन में **परमेश्वर की समझ को** लागू करना।

## मैकगी का सुविचार



"और तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी की सभी जातियाँ आशीष पाएँगी।" आज मसीह के सुसमाचार का संदेश लगभग पूरे संसार में पहुँच चुका है। यह सत्य है कि अब भी बहुत से लोग हैं जिन्होंने इसे नहीं सुना है-यहाँ तक कि हमारे अपने बीच भी ऐसे लोग हैं। फिर भी, यह आशीष सभी राष्ट्रों तक पहुँच चुकी है। और राष्ट्रों के लिए जो सच्ची आशीष है, वह केवल मसीह के द्वारा ही प्राप्त होती है।"


इसहाक के लिए
एक दुल्हन
उत्पत्ति 24

# इसहाक के लिए एक दुल्हन

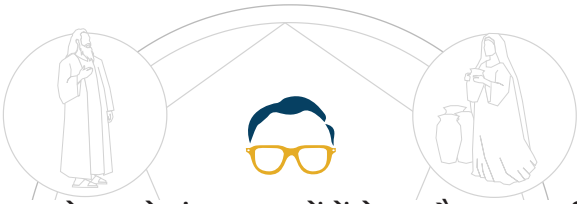
प्रिय परमेश्वर,

हे प्रभु, जब हम आपके वचन को खोलते हैं, तो हमारे जीवन की छोटी-छोटी बातों में भी आपके हाथ को पहचानने में हमारी सहायता करें। जैसे अब्राहम और उसके सेवक ने आपकी अगुवाई पर भरोसा किया, वैसे ही हमें भी आपकी राहों पर विश्वास करना सिखाइए। हमें ऐसे हृदय दीजिए जो रिबका की तरह बिना हिचकिचाहट आपके बुलावे का उत्तर देने के लिए तैयार हों। हमारी आँखें खोलिए कि हम आपके बुलावे, आपकी प्रतिज्ञाओं और आपके महान प्रेम की गहरी तस्वीर को समझ सकें।

यीशु के नाम में, आमीन।

## सेवक का उद्देश्य

**उत्पत्ति 24:1-41**



उत्पत्ति 24 बाइबल के सबसे सुंदर अध्यायों में से एक है। अब्राहम पिता परमेश्वर का एक रूप हैं, इसहाक पुत्र का एक रूप हैं, और सेवक पवित्र आत्मा का एक रूप है जो मसीह के लिए एक दुल्हन को बुलाने के लिए इस दुनिया में आया है।

-डॉ. जे. वर्नोन मैकगी



अब्राहम अब बूढ़ा हो चुका है, फिर भी **परमेश्वर के वादे** अभी भी पूरे हो रहे हैं। हालाँकि इसहाक प्रतिज्ञा का पुत्र है, फिर भी अब्राहम जानता है कि **परमेश्वर का कार्य बिना किसी समझौते के जारी रहना चाहिए।** वह दृढ़ संकल्पित है कि इसहाक की दुल्हन मूर्तिपूजक कनानियों में से नहीं, बल्कि उसके अपने लोगों में से होनी चाहिए-**उन लोगों में से जो जीवित परमेश्वर को जानते हैं।**

## जीवनसाथी का चुनाव करते समय, क्या यह आवश्यक और महत्वपूर्ण है कि वह व्यक्ति आपके विश्वास को साझा करता हो?

उन्होंने **यह कार्य** अपने सबसे भरोसेमंद सेवक को **सौंपा,** जिसके पास उनके पूरे घराने की ज़िम्मेदारी थी।



सेवक के मन में अपने सामने मौजूद इस उद्देश्य को लेकर कुछ संदेह हैं, लेकिन अब्राहम का भरोसा किसी **रणनीति पर नहीं, बल्कि परमेश्वर के वचन पर है।** उसे पूरा विश्वास है कि जिस प्रभु ने उसे बुलाया है, वही उसके सेवक का मार्गदर्शन भी करेगा। वह **सेवक की उस योजना को भी खारिज कर देता है** जिसके तहत इसहाक को वापस उसी भूमि पर ले जाने की बात थी जहाँ से परमेश्वर ने अब्राहम को बाहर निकाला था। **अब्राहम अच्छी तरह जानता है कि परमेश्वर ने उसे कहाँ रहने के लिए बुलाया है।**



> “विश्वास मूर्खता नहीं है। यह किसी ठोस आधार पर टिके रहने का नाम है। सच्चा विश्वास हमेशा तर्कसंगत होता है; यह कभी भी अंधेरे में लगाई गई छलांग नहीं होता। यह अपने जीवन को इस आशा पर दाँव पर लगाना नहीं है कि शायद ऐसा या वैसा हो जाएगा। विश्वास कोई जुआ नहीं है, बल्कि एक निश्चित और भरोसेमंद सत्य है।”

अब्राहम अपने **विश्वास में इतना दृढ़ है** कि उसने **सेवक को इस बात की छूट दे दी** कि यदि उसका उद्देश्य **असफल रहा,** तो वह अपनी शपथ से मुक्त हो जाएगा। जैसा कि मैक्गी कहते हैं, **'अगर यह तरीका काम नहीं करता है, तो परमेश्वर के पास इसे पूरा करने का कोई दूसरा तरीका है।'**

क्या आपने कभी परमेश्वर पर भरोसा रखने के बजाय, उनसे अपनी मर्जी के अनुसार काम करवाने की मांग की है?

# सेवक की प्रार्थनापूर्ण निर्भरता

**उत्पत्ति 24:42-61**

सेवक संसाधन, जिम्मेदारी और अनिश्चितता के साथ मेसोपोटामिया **पहुँचता है। बिना सोचे-समझे जल्दबाजी में कदम उठाने के बजाय,** वह **स्पष्ट रूप से प्रार्थना करता है और ध्यानपूर्वक इंतज़ार करता है। उसकी यह मांग कोई मनमानी नहीं है;** यह चरित्र, दयालुता, परिश्रम और उदारता को परखने की उसकी इच्छा को दर्शाती है।"

इससे पहले कि सेवक अपनी प्रार्थना समाप्त करता, रिबका वहाँ आ पहुँची।

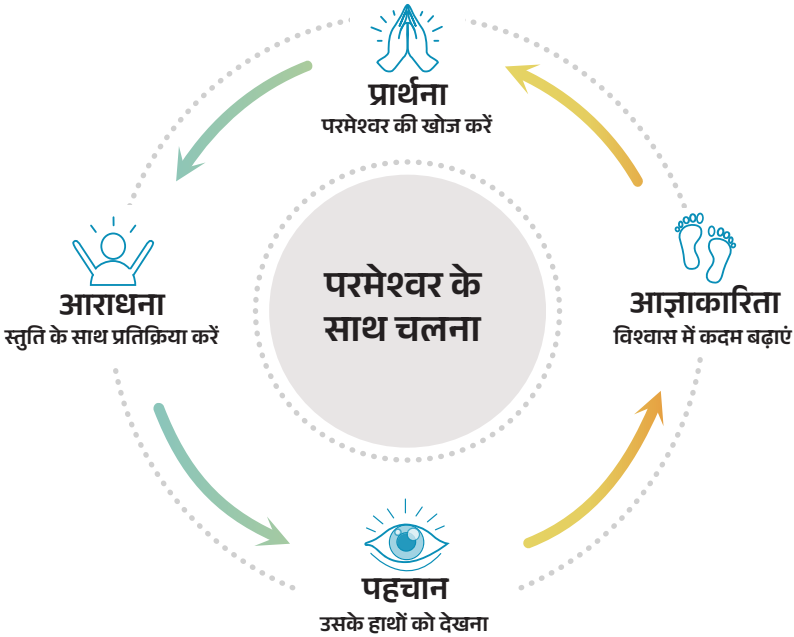
उसे **बहुत सुंदर, पवित्र और परिश्रमी बताया गया है।** जब सेवक उससे पानी मांगता है, तो वह तुरंत उसे **पानी पिलाती है और फिर उसके ऊंटों के लिए भी पानी निकालने की पेशकश करती है। दयालुता का यह कार्य** बहुत कठिन और थका देने वाला था, क्योंकि ऊंट बहुत बड़ी मात्रा में पानी पीते हैं।"



**सेवक बड़े आश्चर्य से देखता है कि कैसे परमेश्वर एक-एक करके उसकी प्रार्थना का उत्तर दे रहे हैं।**

जैसे-जैसे घटनाएँ सामने आती हैं, सेवक जल्दबाजी में आगे नहीं बढ़ता। **वह आराधना करने के लिए रुकता है।** परमेश्वर का मार्गदर्शन हमें **खुद की तारीफ की ओर नहीं,** बल्कि **विनम्रता और स्तुति** की ओर ले जाता है।

**यह क्रम पूरे अध्याय में दोहराया गया है:**




रिबका उस अजनबी के बारे में अपने परिवार को बताने के लिए दौड़कर घर जाती है। उसका भाई लाबान, सोने के गहनों पर ध्यान देने के बाद, तुरंत उस सेवक से मिलने बाहर जाता है। सेवक और उसके साथियों का घर में स्वागत किया जाता है और उनका बहुत आदर-सत्कार किया जाता है।

फिर भी, भोजन करने से पहले, सेवक पहले अपनी बात रखने पर जोर देता है।
उसका उद्देश्य (मिशन) उसके आराम से पहले आना चाहिए।

वह सीधे शब्दों में खुद का परिचय "अब्राहम के सेवक" के रूप में देता है। उसके नाम का उल्लेख नहीं किया गया है। इसके बजाय, पूरा ध्यान पूरी तरह से उसके स्वामी और उसके स्वामी के पुत्र पर केंद्रित है।

वह अब्राहम की **संपत्ति**, इसहाक के **चमत्कारी जन्म** और **उस विरासत** की कहानी बताता है जो इसहाक की है। फिर वह समझाता है कि कैसे अब्राहम ने उसे इसहाक के लिए दुल्हन खोजने के लिए भेजा था और कैसे परमेश्वर ने कुएं पर उसकी प्रार्थना का उत्तर दिया।

यह कहानी एक शक्तिशाली आत्मिक चित्र को दर्शाती है। जिस तरह अब्राहम का सेवक इसहाक के लिए एक दुल्हन खोजने आया था, **उसी तरह पवित्र आत्मा भी मसीह के लिए एक दुल्हन को बुलाने के लिए इस संसार में आया है।**

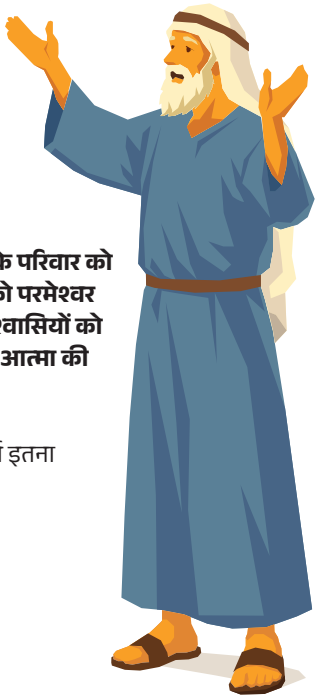
**सेवक अपने बारे में बात नहीं करता है। वह किसी दूसरे के बारे में बात करता है।**



> परमेश्वर का आत्मा इस संसार में किसी दूसरे के बारे में बात करने के लिए आया है।

सेवक का संदेश पूरी तरह से **पुत्र पर केंद्रित है।** वह **पिता की संपत्ति, पुत्र के वारिस होने,** और दिए जा रहे निमंत्रण के बारे में बात करता है।

जब परिवार **पूरी बात सुनता है,** तो वे **पहचान जाते हैं कि यह मामला** परमेश्वर की ओर से ही आया है। वे इस बात पर सहमत हो जाते हैं कि रिबका को **इसहाक की पत्नी बनना चाहिए।**



तुरंत ही सेवक ने झुककर फिर से यहोवा की आराधना की।

फिर वह रिबका को सोने-चांदी के गहने और कपड़े **भेंट करता है,** और **उसके परिवार को भी उपहार देता है।** ये उपहार **उन आशीषों को दर्शाते हैं जो विश्वासियों को परमेश्वर के अनुग्रह** के द्वारा मिलती हैं। **मसीह पर विश्वास** करने के माध्यम से, **विश्वासियों को परमेश्वर के साथ शांति, परमेश्वर तक पहुँच, आनंद, आशा और पवित्र आत्मा की उपस्थिति** प्राप्त होती है।

सेवक का पूरा ध्यान अब भी अपने **उद्देश्य पर केंद्रित रहता है।** उसका कार्य इतना महत्वपूर्ण है कि इसमें **देरी नहीं की जा सकती।**

मैकगी इसकी तुलना **यीशु द्वारा अपने चेलों को बुलाने** और उनके तुरंत प्रतिक्रिया देने से करते हैं, और साथ ही **पवित्र आत्मा** द्वारा आपको मसीह यीशु के उद्धारकर्ता अनुग्रह में **बुलाए जाने** से करते हैं।



> सवाल यह है: क्या आप जाएंगे? क्या आप इस निमंत्रण को स्वीकार करेंगे? क्या आप मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करेंगे? यह कोई ऐसी बात नहीं है जिसे लेकर आप टालमटोल करें या घुमा-फिरा कर बात करें - या तो आप इसे स्वीकार करते हैं, या फिर नहीं करते।

अगली सुबह सेवक तुरंत प्रस्थान करने के लिए तैयार हो जाता है। वह किसी भी तरह का विलंब नहीं चाहता क्योंकि यहोवा ने उसकी यात्रा को सफल किया है।

रिबका के परिवार ने अनुरोध किया कि वह कुछ दिन और ठहर जाए, परन्तु सेवक ने आगे बढ़ने पर ज़ोर दिया। अंत में, उन्होंने स्वयं रिबका की ओर मुड़कर एक सरल प्रश्न पूछा, "क्या तुम इस व्यक्ति के साथ जाओगी?" **उसका उत्तर तुरंत था, "मैं जाऊँगी।**" उसने न तो हिचकिचाहट दिखाई और न ही देर की। उसने एक स्पष्ट निर्णय लिया।



> परमेश्वर के प्रति एक सच्ची प्रतिक्रिया हिचकिचाहट नहीं है। यह एक निर्णय है।

रिबका अपना घर पीछे छोड़ देती है और इसहाक से मिलने के लिए रेगिस्तान के पार की लंबी यात्रा शुरू करती है। इस यात्रा के दौरान वह इसहाक के बारे में और अधिक सुनती है। वह उसके जन्म, उसके जीवन और उस दिन के बारे में जानती है जब मोरिय्याह पर्वत पर उसकी बलि चढ़ाई जाने वाली थी।

वह उसे देखने से पहले ही उसके बारे में सब कुछ जान जाती है

यह बिल्कुल मसीह के साथ एक विश्वासी के संबंध जैसा है। हमने उसे देखा नहीं है, फिर भी हम उस पर विश्वास करते हैं और उससे प्रेम करते हैं।

जब परमेश्वर की इच्छा स्पष्ट हो जाती है, तो क्या मैं पूरे भरोसे और तसल्ली के साथ कदम बढ़ाता हूँ या फिर टालमटोल करता हूँ?

## अब्राहम
↳पिता परमेश्वर

पिता, अपनी सर्वोच्च योजना के अनुसार, अपने पुत्र के लिए एक दुल्हन लाने के लिए भेजते हैं।



## इसहाक
↳पुत्र (मसीह)

पुत्र वह प्रिय वारिस है, जो सब कुछ का उत्तराधिकारी है और अपने लिए चुनी गई दुल्हन की प्रतीक्षा करता है। वह इस पूरे मिशन का केंद्र बिंदु है - दुल्हन को उसके पास लाया जाता है, न कि वह खुद उसे खोजने जाता है।



## सेवक
↳पवित्र आत्मा

पवित्र आत्मा को दुल्हन को खोजने, पुत्र के विषय में बात करने और कदम-दर-कदम उसका मार्गदर्शन करने के लिए भेजा जाता है। वह अपने बारे में बात नहीं करता, बल्कि पिता के धन और पुत्र की महिमा को प्रकट करता है।



## रिबका
↳दुल्हन (कलिसिया)

दुल्हन सुनती है, विश्वास करती है, और सब कुछ पीछे छोड़कर एक दृढ़ निर्णय के साथ कहती है, "मैं जाऊंगी।" वह पुत्र को देखे बिना ही उससे प्रेम करती है, और विश्वास के साथ उसकी ओर अपनी यात्रा शुरू करती है।



# प्रतिज्ञा की पूर्ति और सांत्वना

**उत्पत्ति 24:62-67**

यात्रा शांतिपूर्वक समाप्त होती है। जब ऊँट पास पहुँचते हैं, तब इसहाक **मैदान में ध्यान कर रहा होता है।** रिबका अपनी **आँखें उठाती है** और **उसे देखती है** जिसका अनुसरण करने का उसने निर्णय लिया था। **परमेश्वर प्रतिज्ञा, आज्ञाकारिता और प्रेम को एक साथ मिला देते हैं।**

इसहाक **अपनी दुल्हन को स्वीकार करता है, और अपनी माँ की मृत्यु के बाद उसे सांत्वना मिलती है। परमेश्वर की वफादारी मानवीय अभिलाषा और तड़प को बड़ी ही कोमलता और सटीकता के साथ पूरा करती है।**

**यह दृश्य हमें मसीह और उसकी दुल्हन का एक सुंदर चित्र प्रस्तुत करता है।**



## इसके बारे में सोचें

### सवाल 1

**अब्राहम ने बिना किसी समझौते के भविष्य का मार्गदर्शन करने के लिए ईश्वर पर पूरा भरोसा किया।**

**परमेश्वर आपको परिणामों को नियंत्रित करने के बजाय, अपने ऊपर भरोसा रखने के लिए कहाँ आमंत्रित कर रहे हैं?**

### सवाल 2

**रिबका की आज्ञाकारिता के लिए उसे अपने परिचित परिवेश को छोड़ना पड़ा।**

**आज परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए आपको किस बात को छोड़ने की आवश्यकता हो सकती है?**

## सवाल 3

**यह अध्याय प्रार्थना, चरित्र और स्पष्टता पर जोर देता है।**

**इनमें से किस क्षेत्र में आपको सबसे अधिक बढ़ने की आवश्यकता है?**

## जो लागू करना है उसका चित्र बनाये

# इससे आपको क्या सीख मिली?

अपने जीवन में **परमेश्वर की समझ** को लागू करना।

# मैक्गी का सुविचार



“हे विश्वासयोग्य परमेश्वर, हमारी सहायता कीजिए कि हम आप पर भरोसा रखते हुए चलें, आपकी अगुवाई को पहचानें और आज्ञाकारिता के साथ उसका उत्तर दें। जब हम आपके पीछे चलें, तो हमारे चरित्र को गढ़ें और हमारे हृदयों को स्थिर करें। हमारा जीवन आपकी प्रतिज्ञाओं पर विश्वास और यह कहने की तत्परता को प्रकट करे, “मैं जाऊँगी।” प्रभु यीशु के नाम में, आमीन।”

THRU the BIBLE

## हमारे संसाधनों तक पहुंचें

थ्रू द बाइबल ऐप डाउनलोड करें और ऑडियो बाइबल शिक्षाएं सुनें।
200 से अधिक भाषाओं में उपलब्ध है।

ttb.bible पर जाएं

स्क्रिप्चर एंगेजमेंट पुस्तक के अन्य खंडों के लिए हमारी इंटरैक्टिव डिजिटल फ्लिप बुक देखें।

हमारी वेबसाइट पर श्रृंखला।

ttbsa.org पर जाएं